शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

## संपादकीय

# मृत्यु ईश्वर की देन

विनोबा

मृत्यु ईश्वर की देन है। जब हमारे निकटतम रिश्तेदार, मित्र, तज्ञ - कोई भी हमें दुखों से नहीं बचा पाते, तब वही छुटकारा देती है। मृत्यु में जो दुःख माना जाता है, वह वास्तव में जीवन का दुःख है। मनुष्य को अंत में जो वेदनाएं होती हैं, वे मृत्यु से खतम होती हैं। वह मृत्यु की नहीं, जीवन की वेदना है, जीवन की अंतिम वेदना है। उससे मृत्यु छुड़ाती है। वैद्य-मित्र दोनों जब निरुपाय हो जाते हैं, तब घोर व्यथा से मृत्यु ही छुड़ाती है। मृत्यु की यह देन भूल जाना कृतघ्न होना ही है। रोगादिक से होने वाला दुःख मृत्यु का नहीं, जीवन के असंयम का फल है। मृत्यु का उनसे संबंध नहीं है।

अतः मृत्यु के सिर व्यर्थ मढ़े जाने वाले इस शारीरिक दुःख को निकाल दिया जाये तो और दो दुःख बाकी बच जाते हैं। एक पूर्व-पापों की स्मृति से होने वाला, दूसरा निकटस्थ जनों के बिछोह की आसक्ति से होने वाला। पहले के लिए मृत्यु कैसे जवाबदेह है ? वह जीवन के पापों का फल है। दूसरा मोह का है। यदि हमारा प्रेम सच्चा हो और सेवा की तड़पन हो, तो देह त्यागने से हम मित्रों से दूर नहीं बल्कि निकट पहुंचेंगे - ठेठ उनके भीतर प्रवेश पाएंगे। देह का परदा मौजूद रहते, किसी तरह भी हम इतने अंदर नहीं जा सकते थे। कितनी भी गहरी सेवा हो, वह ऊपरी ही होती है। देह का परदा दूर हो जाने से अब हम दूसरे की अंतरात्मा में घुल-मिलकर उसकी सेवा कर सकते हैं। अर्थात इसके लिए निष्कामता चाहिए। और एक दुःख बाकी बच जाता है। पर वह मृत्यु नहीं, हमारे अज्ञान का है। मृत्यु के बाद क्या होगा, कौन जाने ? हमारे मन की सद्भावना के विरुद्ध मृत्यु के बाद कुछ होने वाला नहीं है और कुवासना ही हो, तो जो कुछ बुरा होगा, वह उस कुवासना का ही फल होगा। यदि ऐसी श्रद्धा, ईश्वर की न्याय बुद्धि पर हो तो वह काल्पनिक भय टल जाएगा। सारांश कुल दुःख चार हैं: 1 शरीर-वेदनात्मक, 2 पाप-स्मरणात्मक, 3 सुहृन्मोहात्मक, 4 भावी चिंतनात्मक और उनके चार ही उपाय हैं। क्रमानुसार - 1 नित्यसंयम, 2 धर्माचरण, 3 निष्कामता, 4 ईश्वर में श्रद्धा। लोग समझते हैं कि किसी के जाने पर न रोना ठीक नहीं। पर शास्त्रकार कहते हैं कि किसी की मृत्यु पर रोना अधर्म है। उसकी आत्मा के लिए प्रार्थना करने के बदले रोने से उसकी गति में बाधा पहुंचती है। कही-कहीं तो मजदूरी देकर रोने के लिए बुलाते हैं। रोने की एक विधि बना ली है। इसलिए कोई प्रियजन गया तो जाग्रत हो जाइए और जीवन क्षणभंगुर है यह समझकर कर्तव्य पूरा कीजिए। मृत्यु का शोक यानी बहुत सारा स्वार्थ का ही हिस्सा। उसको घटा दें, तो जो बचेगा, वह है अविवेक। परंतु इस सबको मनुष्य का अज्ञान ही कहा जाएगा। वह खतम करने के लिए रोज मृत्यु का अभ्यास करना चाहिए। ऐसी बात एक दिन मुझे सूझी। और इसके लिए अमल के लिए सोच लिया कि शाम की प्रार्थना को अंतिम मानें और उसके बाद मौनपूर्वक मरें। **(मृत्यु-मीमांसा, मैत्री 12 नवम्बर, 2016)**